निसर्ग

Natural Integral Spiritual Arts Restoration Group

गुरूवर पद्मश्री राज बिसारिया को समर्पित

भरत नाट्य पर्व

त्रिदिवसीय नाट्य समारोह

23 मई - 25 मई 2024

सन्त गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

23 मई 2024

24 मई 2024

25 मई 2024

निसर्ग

सी 136/14, शिवानी विहार, कल्याणपुर, लखनऊ-226022

मोबाइल : 9839 020107 | ईमेल : nisargtheatregroup@gmail.com | वेबसाइट : www.lalitnisarg.org.in

प्रथम दिवस - 23 मई 2024

राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत नाटक
"कालापानी"

उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार 1909 से लेकर 1938 के बीच अंग्रेजों ने 585 क्रान्तिकारियों को सेल्यूलर जेल भेजा था जिनमें 398 क्रान्तिकारी एकीकृत बंगाल के थे। 95 क्रान्तिकारी पंजाब के, 3 महाराष्ट्र के, 17 बिहार के, 18 उत्तर प्रदेश के, 14 केरल के, 8 आंध्र प्रदेश के और 5 क्रांतिकारी उड़ीसा के थे। इनके अलावा 27 क्रान्तिकारी हिमाचल प्रदेश, उत्तर पश्चिमी सीमा, तमिलनाडु आदि राज्यों के थे। यह बड़ी विडम्बनामय बात है कि हम इनमें से अधिक से अधिक 50 क्रान्तिकारियों को ही जानते होंगे। राष्ट्र की जनता अपने मानस-पटल पर लगभग साढ़े तीन सौ क्रान्तिकारियों की कोई स्मृति नहीं बना पायी। नाटक **"कालापानी"** इन्हीं गुमनाम रह गये हुतात्माओं के अप्रतिम बलिदान और वेदना को दी गयी श्रद्धांजलि है।

द्वितीय दिवस 24 मई 2024

सनातन-संस्कृति की वैश्विक महत्ता का नाटक
"महाप्रश्न"

सनातन संस्कृति पर कई शताब्दियों से दोहरा प्रकोप छाया हुआ है। बाहरी पैशाचिक धर्मान्ध आक्रमणकारियों का अत्याचार तथा भीतरी पाखण्ड और आडम्बर का महारोग। जिस कारण इसके सार्वकालिक - सार्वभौमिक मानवीय दर्शन का हनन हो रहा है। इस प्रकार वर्तमान कालखण्ड में सनातन संस्कृति के वास्तविक अनुयायी दोहरी विडम्बनामय त्रासदी से संघर्षरत हैं। इस त्रासदी से भारतवर्ष को कब और कैसे मुक्ति मिलेगी, यह पूरी मानवता के लिए महाप्रश्न है। वैश्विक स्तर पर मानवता के संरक्षण के लिए यह महाप्रश्न रचनाशीलता के माध्यम से जनमानस के समक्ष लाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

तृतीय दिवस 25 मई 2024

कश्यप ऋषि की तपोभूमि कश्मीर की त्रासदी पर आधारित नाटक
"चिनार वृक्ष और हम"

प्रस्तुत काव्य नाट्य प्रस्तुति श्री धन सिंह मेहता 'अनजान' की काव्यकृति "मैं चिनार बोल रहा हूँ" और ललित सिंह पोखरिया के काव्य संग्रह "संलाप" की कुछ कविताओं का समन्वय है।

"मैं चिनार बोल रहा हूँ" कश्यप-तपोभूमि कश्मीर के सनातन गौरव तथा धर्मान्ध आतताइयों के प्रकोप से क्षत-विक्षत वर्तमान दशा-दिशा का मार्मिक एवं विवेकपरक अभिलेख है। जिसे व्यक्त करने के लिए कश्मीर लोक के अभिज्ञान-वृक्ष "चिनार" का मानवीकरण किया गया है। यह केवल बहुआयामी गौरवशाली राष्ट्र भारत के लिए ही नहीं अपितु इस धरती के मानव-मात्र के लिए चिन्तन का विषय है। 'अनजान' जी ने कश्मीर की जो हृदय विदारक त्रासदी दिखायी है, उस त्रासदी का दंश वहाँ के कुछ भोले-भाले, मानवता के मार्ग पर चलने वाले मुस्लिम बन्धु-बान्धवों ने भी झेला है।

इस काव्यात्मक नाट्य प्रस्तुति में कश्मीर के सनातन गौरव, पुरातन कश्मीरी ऋषि-मुनियों द्वारा सृष्टि के कल्याणार्थ दिये गये आध्यात्मिक योगदान को रेखांकित किया गया है। उसके सापेक्ष लगभग 100 वर्षों के भीतर राजनीतिक दुष्चक्र के कारण कश्मीर की क्षत-विक्षत आत्मा का मार्मिक चित्रण किया गया है।

"मैं चिनार बोल रहा हूँ" के पश्चात् इसमें ललित सिंह पोखरिया के "संलाप" काव्य संग्रह की उन कविताओं का नाट्य प्रस्तुतीकरण है जिन कविताओं में सनातन संस्कृति के मूल दर्शन के प्रति तथाकथित सनातनधर्मियों की शिथिलता, उदासीनता और प्रतिकूलता को उजागर किया गया है।

समारोह आयोजन संस्था निसर्ग का संक्षिप्त परिचय

- रंगमंच एवं इतर सृजन माध्यमों से व्यक्ति और समाज के मानवीय विकास में विगत 22 वर्षों से सतत् सक्रिय नाट्य संस्था।
- बालकों और युवाओं को नाट्य कला का ज्ञान देने और नैतिकतापरक व्यक्तित्व विकास हेतु नाट्य प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- शास्त्रीय (संस्कृत) नाट्य परम्परा के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य-मंचन एवं गोष्ठियों का आयोजन।
- लोकनाट्य परम्परा के प्रचार-प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य-मंचनों, गोष्ठियों एवं कलाकार सम्मान कार्यक्रमों का आयोजन।
- श्रेष्ठ साहित्य के द्वारा व्यक्ति और समाज के गुणात्मक विकास हेतु विख्यात साहित्यकारों की रचनाओं का मंचन।
- संवेदनशीलता, सकारात्मकता और नैतिकता के संरक्षण हेतु रंगमंच के महत्वपूर्ण नाटकों का मंचन।
- बालकों का व्यक्तित्व विकास करने एवं उन्हें सुसंस्कारों की प्रेरणा देने हेतु नाट्य प्रशिक्षण एवं नाट्यमंचन।
- सामाजिक, आर्थिक रूप से दुर्बल वर्ग के वयस्कों, ग्रामीण, अपवंचित एवं अनाथ बालकों के कल्याण हेतु लघु-दीर्घ नाट्य कार्यशालाएँ एवं नाट्यमंचन।
- सन 2001 से वर्तमान तक सामान्य वर्ग के लिए अभिनय एवं व्यक्तित्व विकास हेतु 25 बाल नाट्य कार्यशालाओं सहित 50 से अधिक नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन।
- वयस्क वर्ग के 65 और बाल वर्ग के 25 नाटकों का मंचन।
- पाँच नाट्य समारोहों का आयोजन।
- उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बाहर कुल 250 नुक्कड़ नाटकों का मंचन।
- साहित्य, लोक, पर्यावरण, चित्रकला एवं अन्य विषयक गोष्ठी - प्रदर्शनी।
- लखनऊ में बॉन्ड स्ट्रीट थिएटर न्यूयॉर्क, एक्ज़ाइल थिएटर काबुल और पूर्वाभ्यास थिएटर नई दिल्ली के कलाकारों को आमन्त्रित कर मलिन बस्ती के बच्चों के कल्याणार्थ नाट्यमंचन और नाट्यकार्यशालाओं का आयोजन।
- निसर्ग के रंगकर्म की स्तरीयता तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय सरोकारों से प्रभावित होकर निम्न अनेक राष्ट्रीय - प्रादेशिक, शासकीय - अशासकीय संस्थाओं द्वारा सहयोग -

  केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी; उत्तर पूर्व क्षेत्र - गुवाहाटी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान- नई दिल्ली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय- नई दिल्ली, उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र- प्रयागराज, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान - लखनऊ, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् लखनऊ, संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, साहित्य अकादमी दिल्ली, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय- भोपाल, राज्य संस्कृति संचालनालय- भोपाल, एहसास - लखनऊ, सी.आर.एस. - उत्तर भारत, यूनिसेफ़ - लखनऊ, विज्ञान फाउण्डेशन - लखनऊ, शम्भूनाथ फाउण्डेशन - बनारस आदि।

समारोह नाट्य निर्देशक ललित सिंह पोखरिया का कृतित्व परिचय

नाट्यकला स्नातक : भारतेन्दु नाट्य अकादमी 1984-86 व एकवर्षीय इन्टर्नशिप 1986-87।

विभिन्न आयाम : 1987 से निरन्तर अभिनेता, नाट्य-लेखक, निर्देशक, शोध-अध्येता और प्रशिक्षक के रूप में सक्रिय।

अतिथि प्रशिक्षक : भारतेन्दु नाट्य अकादमी लखनऊ (1996 से) एवं हिमाचल कल्चरल रिसर्च फॉरम नाट्य अकादमी, मण्डी, हि.प्र. (2007 से)।

नाट्य लेखन : 85 नाटकों और 50 नुक्कड़ नाटकों का लेखन।

नाटक एवं कार्यशाला निर्देशन : 86 प्रस्तुतिपरक नाट्य कार्यशालाओं के निर्देशन सहित 130 नाटकों और 50 से अधिक नुक्कड़ नाटकों का निर्देशन।

अभिनय : 86 नाटकों के कुल 500 मंचनों में अभिनय।

रंगमंच में संस्कृति और मानवता से संबंधित अनेक नाट्य प्रयोग और शोध कार्य :

- कुमाऊँ की लोकनाट्य शैली का विकास।
- थारू जनजाति और बुन्देलखण्ड की लोक परम्पराओं का नाट्य प्रयोग।
- अल्मोड़ा और हमीरपुर जनपदों के लोकांचलों का सर्वे-अध्ययन। (1993 से 2000 तक)
- संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सीनियर फेलोशिप के अन्तर्गत शोध कार्य। (2003-2005)।
- अनाथ, बेसहारा, निर्धन, ग्रामीण व बाल संरक्षण गृह के बच्चों, रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन में जीवन-संघर्ष करते बच्चों तथा आजीवन कारावासियों को मानवीय स्पर्श देने के लिए कार्यशाला-निर्देशन एवं नाट्यमंचन।

समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में लेखन : छायानट, कला वसुधा, कथा-क्रम, समाचार टाइम्स, श्री टाइम्स, पाखी, पत्रकार सदन, भरत रंग, सृजन से, मानव संस्कृति, लमही, नादरंग, lucknowlead.com, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमर उजाला, उत्तर उजाला, राष्ट्रीय सहारा सहित अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।

संस्थागत कार्य : 2001 में नाट्य संस्था "निसर्ग" की स्थापना कर अद्यतन लगभग 1000 बालकों और युवाओं सहित सम्पूर्ण समाज के नैतिक विकास हेतु नाट्य प्रशिक्षण एवं 60 से अधिक नाटकों का मंचन।

दूरदर्शन और आकाशवाणी अनुभव : संस्कृति, पर्यावरण, स्वाधीनता आन्दोलन, शिल्प और लोककला पर वृत्तचित्रों का शोध, लेखन, सह-निर्देशन। ● **टेली फ़िल्म :** बाँसुरी, मेरा बेटा आदि में अभिनय। ● साहित्यिक रचनाओं पर आधारित धारावाहिकों का लेखन-निर्देशन। ● बालचरित्र निर्माण हेतु नाटकों का लेखन-निर्देशन। अनेक भेंट वार्ताएँ।

फ़िल्म अभिनय अनुभव : वाह ताज, बमफाड़, काग़ज़, रात अकेली है, होली काउ।

प्रकाशित पुस्तकें : 1. नाट्य संग्रह- खोज (दो नाटक - हुंकार, आखेट) **2. नाट्य संग्रह- क्रान्तिपथ और कालापानी** (दो नाटक) (उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत) **3. दिल्ली 6** (वाणी प्रकाशन) **4. छायानट पत्रिका** (उ. प्र. संगीत नाटक अकादमी) में पाँच नाटक। **5. कला वसुधा पत्रिका** में दो नाटक। **6. काव्य संग्रह - "संलाप"**।

पुरस्कार : संगीत नाटक अकादमी, संस्कृति मन्त्रालय - **भारत सरकार सम्मान 2021** (द्वारा महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू)। **उ. प्र. संगीत नाटक अकादमी सम्मान 2005**। **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार 2020,** उ. प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ। **कलानिधि सम्मान 1989** द्वारा मयूरपंख लखनऊ। **भारतेन्दु नाट्य अकादमी रजत जयन्ती सम्मान 2000**। **मोहन उप्रेती स्मृति सम्मान 2010,** अल्मोड़ा। **आचार्य नरेन्द्र देव अलंकार 2010,** नैनीताल। **संकल्प सम्मान 2012,** लायन्स क्लब लखनऊ। **लोकमत सम्मान 2013,** लोकमत समाचार समूह लखनऊ। **प्रतिभा संस्कृति सम्मान 2015,** नई दिल्ली। **प्रेरणा सम्मान 2017,** कन्सर्न्ड थिएटर लखनऊ। **रंगगुरू सम्मान 2018,** कादम्बरी कला परिषद लखनऊ। **कलागुरू सम्मान 2019,** संस्कार भारती, गोमती नगर, लखनऊ। **रंग सम्मान 2019** हौसला फाउंडेशन, लखनऊ। **नौशाद सम्मान 2022** द्वारा नौशाद संगीत विकास केन्द्र, लखनऊ। **इन्द्रमणि बड़ौनी सम्मान 2022,** समीहा लखनऊ। **प्रेरक सम्मान 2023,** पंडित जगदीश नारायण मिश्र स्मृति न्यास लखनऊ सहित 30 से अधिक प्रदेश और राष्ट्रीय सम्मान।

सम्प्रति : संस्थापक अध्यक्ष - निसर्ग।

LUCKNOW IS TALKING ABOUT

LUCKNOW TIMES, THE TIMES OF INDIA 3

Hard work always gets recognised someday, says Lalit Singh Pokhariya

Lalit Singh Pokhariya and (inset) being conferred SNA award for the year 2021 by President Droupadi Murmu

Abhishek Shukla

Noted theatre personality **Lalit Singh Pokhariya** was recently conferred with the prestigious Sangeet Natak Akademi (SNA) award for the year 2021 for his contribution in theatre by President Droupadi Murmu in Delhi. Pokhariya has popularised theatre in schools and colleges and has taught theatre to science and engineering students in workshops and has been working to promote theatre in the city since decades. "I believe hard work always gets recognised someday. It is because of the blessings of my guru Raj Bisaria and my parents that I have received such an honour. But it also gives a challenge to be more devoted, be more attentive towards your work," says the Bhartendu Natya Akademi (BNA) alumni.

Having also been awarded with Senior Fellowship by Sangeet Natak Akademi in 2003-5, Pokhriya has been working extensively with Uttrakhand, Bundelkhand and Tharu tribal areas for theatrical experimentation with folk traditions. He shares, "I have done theatre not only because I know acting or direction but have chosen my work to have human and social significance so that I am able to help the people, especially the downtrodden and make society a better place. This is my way of contributing to society. And this award is proof of my efforts towards humanitarian causes."

CITY GLORY

THEATRE MAN

A life dedicated to stage: Lalit Singh Pokhariya

Ratan Mani Lal

At first, he looks like a brooding man, lost in his thoughts, walking in deep thought. But on close interaction, Lalit Singh Pokhariya is a man driven by his passion for theatre and children. He has been deeply and regularly involved in theatre activities for more than two decades now; and is considered a pioneer in initiating and promoting theatre for children.

"I have always believed that all children are born with the ability to perform. One needs to talk to them at their own level and they pick up the nuances of theatre very quickly," he said in an interview. A graduate in theatre arts and having completed his internship from Bharatendu Academy of Dramatic Arts (BNA), Lucknow in 1984-87, Pokhariya has acted in 400 shows of over 60 plays directed by internationally known Directors like Raj Bisaria, Fritz Bennewitz, Bhanu Bharti, B.M Shah, Waman Kendre and many others.

As playwright, director, teacher and workshop director, he has vast experience in children and adult theatre. He has written over 76 plays, directed 1130 plays and conducted over 75 workshops. His most satisfying experience is having worked with rural children, deaf and dumb children, orphans, street children, children's homes, women homes and prisoners to give them moral support and human upliftment.

At present he is the founder-president and director of Nisarg Lucknow, besides devoting a lot of time in freelance theatre, teaching and training, writing, directing and acting. He is a visiting faculty in BNA Lucknow, Himachal Cultural Forum Natya Academy, Mandi (HP), IISE Lucknow, Garhwal University, Shrinagar (Uttarakhand) and many other institutes.

"I was born in Pithoragarh and had a keen interest in theatre in my school days. The curiosity among children for the dramatic arts is immense," he says. His rise in the theatre world has been steady as he preferred keeping a low profile. He worked as programme coordinator in BNA Repertory Lucknow, SRC Repertory-New Delhi and Yaswant Repertory, Lucknow. "I have always believed that adversities in the life of an artist are an opportunity for rebuilding themselves and to make themselves better."

Kumaon background

He has been working tirelessly to develop the theatre of Kumaon and Tharu tribes of Uttarakhand to re-establish the spiritual values of the old traditions of Madhya Himalaya and their spectacular grandeur. "I grew up in Kumaon, amidst nature and a culture of arts, expression and yoga. I acted in local Ramlila presentations but at the age of 7 or 8 years, I was an eager learner. It did give me a feel of the stage, speaking before the public, and acting," he says.

He wanted to become a doctor but could not clear the pre medical test, and then went on to study naturopathy through a correspondence course. He studied a lot and completed many practical courses. "It did not help me make a career; I came to know Lucknow where a yoga institute headed by Dr Khushiram Sharma Dilkash was set up. I could not get a job there but he asked me to handle a magazine named Prakritik Jeevan, and I became its editor." But Dr Dilkash passed away in 1983 and the institute also closed down. "Then I turned towards the theatre, and my friends and I wrote poems and I enacted them daily. In 1984 I met Raj Bisaria for the first time, and some time later I appeared for an interview and test

Pokhariya played the main role in the Hindi adaptation of Harold Pinter's classic one-act play The Dumb Waiter, directed by Raj Bisaria and staged at Bhopal's Ravindra Bhawan during Theatre Olympiad 2017

Achievements

Honours & awards: Bhartiya Natya Akademi Silver Jubilee Award, Best Writer and Director Award by Kalakar Association, UP, Manjushri Award, Kalanidhi Award given by the Governor of UP, Senior Fellowship by the HRD Ministry, Government of India, Pankh Kala Nidhi Award, Kadambari Nandan Smriti Samman, Sahityakar Gopal Upadhyay Smriti Samman, Late Devesh Chakravarty Samman, Uttarayani Samman, Josh Samman, Munal Samman, Mohan Upreti Lok Sanskriti Samman, Aacharya Narenra DevAlankar-2010 and Lokmat Samman-2013.

for a post there. Although my theatre test did not go well, my poetry rendition and music helped me get in."

He says his years in BNA were most constructive during which he learnt a lot. "My colleagues, teachers and everyone at the institution helped me in every way. I grew up in a world of theatre with total commitment." Later he completed his internship and went into freelancing, which included writing, directing, acting and other theatre-related activities. A few years later he got involved in children's theatre workshops. "I consider Raj Bisaria as my ultimate Guru as he taught me everything about theatre."

Prolific writer

Pokhariya is a prolific writer. He has written several documentaries for Lucknow Doordarshan based on culture, freedom movement, arts, crafts and environment aired by Lucknow Doordarshan Kendra and National Network. He also penned some fiction and plays for Doordarshan and All India Radio.

Among his published works and books are Phansi se badh kar, Aavishkar ki khoj mein, Dukhiya mein beetal tatiyan, Nakata Buccha and Dilli-6. Based on Shakespeare's Two Gentlemen of Verona, the play Dilli-6 was published by Vani Prakashan. Several articles by him on theatre, arts and culture have been published in newspaper and magazines like Vartman Sahitya, Kathakram, Bharat Rang, Samachar Times, Rashtriya Sahara, Hindustan, Dainik Jagran, Lambi, Manav Sanskriti, Pakhi Patrakar Sadan, Kala Vasudha, Umar Ujala, Srijan Se etc.

His tips for acting always focus on proper training. "Speech, body fitness are two basic tools of acting. One needs to be active, energetic and flexible. This has to be maintained for life. People of north Indian tend to be lazy as they feel they are born actors. Children pretend to be suffering from stomach ache when they want to avoid school, and as they grow up, they lie effortlessly when they wish to keep a secret. It is a part of personal life. But on stage, this is not so, therefore it is more difficult to enact and is creative expression. Therefore, training is important."

He is an easily accessible, simple and unassuming person who is always ready to talk about theatre. He is also invited to hold theatre workshops not only for children but also for people from different backgrounds, professionals, housewives and others.